अध्याय- 5

मॉरीशस का हिंदी काव्य-

➢ **भूमिका-**

मॉरीशस म अप्रवासी भारतीयां का शतबंद मजदूर या कुली के रुप म आगमन हआ. अंग्रेजा को नीतियां, फ्रेंच जमींदारां के अत्याचारां का प्रकोप से ये सभी भारतवंशियां त्रस्त थे. इन विभिन्न यातनाओं, जुल्मां के बावजूद भी उन्हांने अपनी भाषा और अपनी संस्कृति तथा धम से जुडे रहे, उसी म उनको जीत हई. उससे तत्कालीन राजनीतिक बदलाव आए, समाज को धारा भी परिवतित हई.

यह भी सत्य है कि आय समाज ने समाज तथा धम के क्षेत्र म नई क्रांति का निमाण किया, फिर भी पौराणिक और प्राथमिक धम संस्कृति के संरक्षण को भी हम नजर अंदाज नहां कर सकते शुरुआत म कट्टरता ने ईसाई धम परिवतन के प्रवाह को रोका तो था, अन्यथा तो आयसमाज को सुधार को सुधारने के लिए कोई व्यक्ति मिलता ही नहां. लेकिन अनुदारवादी कट्टरता ने मॉरीशस के समाज को और शिथिल बना दिया, और उसी को दूर करने के लिए आय समाज ने सुधार और समाज के उद्धार को नई शक्ति को खोजा. आयसमाज ने अपने व्याख्यान, उपदेश, पत्र पत्रिका के प्रकाशन से समाज म जागृति लाने का एक प्रयास किया.

➢ **प्रारंभिक काल या प्रेरणा-काल और मॉरीशस का काव्य साहित्य-**

मॉरीशस के हिंदी साहित्य म प्रथम काव्यरुपी धारा का प्रादुभाव हआ. डा.मणिलाल द्वारा संपादित "हिंदुस्तानी" पत्रिका 2 माच, सन 1913 के अंक म प्रकाशित हई तथा " सत्य होली" लेख प्रकाशित हआ. जिसम साहित्यिक और सांस्कृतिक द्रष्टि से विकास देखा जा सकता है. 'होली' काव्य के कवि का परिचय ठीक से प्राप्त नहां है."कवि के वास्तविक नाम का पता नहां चलता है. कवि ने 'गणेशी' उपनाम से 'होली' शीषक कविता प्रकाशानाथ भेजी थी.(1) मॉरीशस का प्रथम 'होली' काव्य का एक अंश प्रस्तुत है-

होली

आयां ने ऐसी होली मचाई

चहं दिशि से सज्जन सब आए, बैठे सभा बनाई

गावत वेद अति नीको, ध्यान यश यगराई

अगम गनि जाकि है राई-- 1

खेलत फाग सुलभ सुचि संयम, सत पिचकारी बनाई

प्रेम रंग-रंग भर, भरी, भरत- सा गुलाल सुहाई

रंगे सज्जन सब आई-2

जप तप गान वेदन क, भी उत्साह बढाई

मिलत परस्पर से सज्जन, दाह कष्ट बिसराई

करत है जगत भला-3

विधवा अनाथ विपति गांव का, तापर द्रष्टि चलाई

करत प्रबंध अहर निशि बासा, तन मन धन से रदाई

दु:ख जिन पर अधिक-4

सत्य प्रचार सुधार जगत को, किफाग सुखदाई

खेलह खेलह परहित कारण, देह अविधा नशाई

'गणेशी' बलि- बलि जाई-5

क्या आनंद दे, वाह रे होली

इस काव्य म अंतिम चरण म हम 'गणेशी' नाम का पता चलता है, लेकिन वास्तविक नाम का पता नहा चलता है. जिस वक्त मॉरीशस म पत्र पत्रिकाओं का उदय हो रहा था उस वक्त खडी बोली का परिचय मॉरीशस म हो रहा था, कहा गांधीजी और मणीलाल डॉक्टर जैसे महानुभावा के भाषणा को सुनकर लोग प्रभावित हो रहे थे. स्वामी दयानंद के ग्रंथ 'सत्याथ प्रकाश' जब मॉरीशस पहंचा उसके साथ ही आय समाज का स्थापना के साथ- साथ वैदिक धम के प्रचार एवं समाज सुधार का काय भी प्रारंभ हो चुका था.

'होली' कविता का विशेषता का ओर द्रष्टि कर तो काव्य के भाव, वण्य, विषय एवं काव्य शिल्प का अनेक विशेषताएं है. उस समय का तत्कालीन परिस्थितिया का चित्रण हआ है. जप, तप, विधवा, अनाथ, वेद गान, सत्य के प्रचार, जगत सुधार, अविधा का नाश गांव का विपत्ति को दूर करने का प्रयत्न आदि. समाज सुधारा का बात अधिक रही.

मॉरीशस के प्रवासी भारतीय कविया म पं.लक्ष्मीनारायण चतुवदी'रसपुंज'का नाम सर्वापरि है. कवि के पिताजी पं. रामटहल चतुवदी मॉरीशस पहंचे. उन्हा ने भाषा संस्कृति के लिए प्रेरित किया. मॉरीशस म उन्हा ने दो काव्य संग्रह लिखे -1.रसपुंज कुंडलियां 2.शताब्दी सरोज

1. **रसपुंज कुंडलियां(1923)**

पं.लक्ष्मीनारायण चतुवदी'रसपुंज'का प्रथम काव्य संग्रह है- 'रसपुंज कुंडलियां' इस संग्रह के अंतगत112 कुंडलियां शामिल है. कुंडलियां छंद के प्रथम दो चरण दोहे के तथा अंतिम चार चरण रोला होते है.कवि पं.लक्ष्मीनारायण चतुवदी'रसपुंज' ने धम,नीति, सामाजिक बुराइयों से बचने के लिए उपाय, मॉरीशस के इस कवि की छंद म कही गई शायद लम्बे समय तक मॉरीशस म भारतीय वंशी याद रखगे.

"परवासी थे मॉरीशस रामटहल द्विजराज

पंडितवर नित करतु ह, हिंदू धम रिवाज

हिंदू धम रिवाज दियो, परवासिन केरो

न तु ईसा-संतान बनत हिंदू बहतेरो

बरणत कवि रसपुंज, कियो हरिचचा खासी

कथा पुराण सुनाय, बचायो धरम प्रवासी."

कवि की कुंडलियों के उपर संस्कृत के ज्ञान का प्रभाव भी दिखलाइ देता है.

बहनामप्यसाराणां संह्यति: कायसाधिका

तुणै: गुणत्वमापन्ने: बध्यंते मतदंतिन:

"कवि ने स्वतंत्रता से गज के साथ 'हय'(घोडे)को भी उक्त कुंडलियां म सम्मिलित कर लिया है. वस्तुत: इन कविताओं म रसपुंज की भाषा संस्कृत गभित है. अन्योक्तियों के भाव संस्कृत से अपनाये गये ह, परंतु भाषा-शैली और पदों की रचना उनकी मौलिकता की परिचायक है."(2) पं.लक्ष्मीनारायण चतुवदी'रसपुंज'का समकालीन कवि के रूप म आये हए कवि के नाम के साथ एक ही नाम आता है वह है 'मियांजी साइक्लोन' के नाम से प्रसिद्ध अली मुहम्मद मॉरीशस के नोत्रदाम के निवासी है. उदू म एक दीघ कविता लिखी जिसका हिंदी अनुवाद फुण्डन ने किया आज वो कविता प्रवासी कविता का महत्वपूण अंग बन गई. कविता की विषय वस्तु मॉरीशस मे आये 29,अप्रैल सन 1892 म 'साइक्लोन'(तुफान) पर आधारित है. उस वक्त मॉरीशस म तूफान से भारी तबाही हई थी. "जिसकी लपेट म आकर मॉरीशस बरबाद -सा हो गया था. पोर्टलुई का एक तिहाई भाग खासकर शॉ-दे-मास के आस पास नष्ट-भ्रष्ट हो गया था. इस तूफान से देश म 1260 लोग मरे थे, 2,000 लोग घायल हए थे और 50 हज़ार लोग बेघर हो गए. इसी बवण्डर म छब्बीस गिरजाघर गिरे थे और देश के अनेक शक्कर कारखाने तथा आलीशान मकान गिर पडे थे. करोडों वृक्ष जड समेत उखड गए थे और ईख की आधी से अधिक फसल बरबाद हो गयी थी. यह सब कुछ अचानक हो गया था और केवल दो घंटे म यह तबाही मच गयी थी."(3)

कुछ पंक्तियां—

महलो-मकान हवेली,हए चूर-चूर थे

और दरख्तों को रख दिया जड से उखाड के

कांपा पहाडों- जंगल सब उसके शोर से

मॉरीशस को चूर कर दिया एकदम मरोर के

कवि ने भयावह शैली का प्रयोग किया है.सन 1933 म पं.कन्हैयालाल मिश्र और अन्य विद्वान जब मॉरीशस पहंचे उस वक्त आय समाज के वैदिक धम संस्थाओं और सनातन धमियों के बीच खंडन मंडन को परिस्थितियां चल रही थी. कविता के जरिए हिंदी भाषा का आकार मजबूती पकड रहा था. पं. जदुनंदन शमा का गेय काव्य प्रसिद्ध रहा. जिसका शीषक “कृष्ण की बंशी” और दूसरी किताब “बंशी की तान” गीतों का संग्रह है. पं.लक्ष्मीनारायण चतुवदी’रसपुंज’का दूसरा काव्य संग्रह “शताब्दी सरोज” आप्रवासी भारतीयों के मॉरीशस म सौ वष पूरे होने पर प्रकाशन हआ था.

मजदूरों के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया था उसका सजीव चित्रण है –

जिसको श्रम अति असह सताया अपना जीवन आप गंवाया

गोरे करत बूट प्रहारा चोट खाय तजते संसारा

शव शासक समीप जब जाता डाक्टर रोगी ताहि बताता

गोरे का अपराध न साबित हाकिम करता न्याय कदाचित

कितने जन कानन छिपि कांही बिना अन्न जल के मर जांहि

पुलिस पकड कितनों को लावे हाकिम उनको जेल पठावे

मार-पीट पतिदिन अधिकाई अशाय भये श्रमजीवी भाई

तनका रक्त निकाल के सींचे मॉरीशस भूमि

काट- काट कानन किये, नंदन वन तन हमि(4)

मॉरीशस के फ्रेंच किसानों के साथ अमानवीय व्यवहार हआ इसे भी इन पंक्तियों म देखा जा सकता है.

“फ्रेंच किसान मनोरथ भारी,पशु बल के पूरे अधिकारी

आपन भोजन आप पकाव, जाय सबेरे संध्या आव

जंगल काट कियो मैदान, खेत बनाये सहित सिवाना

उपल बटोर सजाये सीमा, खाकर दाल भात अरु पीमा

गन्ने कि हो फसल तैयारी, काट ढोय मूला म डारी

पेर-पार कर राब बनाई, शक्कर श्वेत रुप प्रकटाई

रात दिवस श्रम सहित सब, कर काम तन ताय,

शक्कर कर तैयार बह, कठिन कलेश उठाय''(5)

प्रारम्भिक काल को कुछ सामान्य विशेषताएं-

1.गध और पध को सामान्य प्रवृतियां-

मणिलाल डाक्टर द्वारा स्थापित ''हिंदुस्तानी''प्रेस को स्थापना के फलस्वरुप और विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के जन्म से प्रारंभिक काल के हिंदी साहित्य का आविभाव हआ. कविता म ''होली'' और ''सत्यहोली'' के रुप म लेख का प्रकाशन हआ. पंडित आत्माराम विश्वनाथ का 'मॉरीशस का इतिहास'' गध साहित्य को प्रथम पुस्तक का प्रकाशन मॉरीशस म हआ. पं.लक्ष्मीनारायण चतुवदी'रसपुंज' का ''रसकुंडलियां'' पं.काशीनाथ किष्टो के लेख तथा पं.तपेश्वर नाथ चतुवदी को इंदो कहानी,जदुनंदन शमा को बंशी को तान,शताब्दी सरोज का प्रकाशन हआ.

पत्र पत्रिकाओं को स्पधा

सुधारवादी प्रवृतियां

लोकाश्रित सहित्य सजन

धामिक खंडन मंडन

भारतीय लेखकों का योगदान

भाषाई प्रवृत्तियां

निष्कष के रुप म देखे तो अप्रवासी भारतीयों म शिक्षा, राजनीतिक चेतना-जागरण, सामाजिक धामिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक यातना को मुक्ति हेतु एक प्रेरणादायक रहा है. समाज को भाषा भोजपुरी, अवधी, खडी बोली, क्रियोली आदि के मिश्रण से युक्त रही. पांडित्य को भाषा के बदले लोक बोली और अभिधा शब्द शक्ति म हई. जहां शिक्षा नहीं थी लेकिन संस्कृति और संस्कार थे धम और कम थे अंधश्रधा भी है रुढियां और अंधविश्वास भी है लेकिन लिखित साहित्य नहीं था ऐसे काल म काव्य साहित्य का सृजन होना कोई सामान्य घटना नहीं है.

बीच के समय को रचनाओं के संग्रह नहीं है. जमाना, आयवीर मॉरीशस इंडियन टाइम्स, आर्योदय को पुरानी प्रतियों मे मिल जाती है या तो बिना प्रकाशन के कहीं बंध बक्से म दम तोड रही होगी.

(2) **<u>मॉरीशस मध्यकाल या संघष काल और उसका काव्य –(1935-1968ई.)</u>**

सन 1935-1968ई तक के काल खंड को मॉरीशस के हिंदी साहित्य का मध्यकाल माना गया है. “मध्यकाल का उदय एक नवीन सामाजिक-आथिक तथा राजनीतिक सांस्कृतिक मोड एवं संघष को लेकर अवतरित हआ. साहित्य म इस संघष का प्रतिफलन तो परिलक्षित होता है, स्वयं साहित्य ने भी स्वातंत्र्य संघष हेतु माग प्रशस्त किया” (6)

मध्यकाल का काव्य प्रकाशन-

1.पत्र पत्रिकाओं म प्रकाशित कविताएं

2.व्यक्तिगत काव्यसंग्रह

3.संपादित रुप म कवियों को सामूहिक रचनाएं

प्रारंभिक काल के भारतीय रचनाकारों को द्रष्टि से देख तो श्री जयनारायण राय मॉरीशस के प्रथम लेखक माने जा सकते ह. अष्ट कविताएं म उनको आठ कविताएं – अभिलाषा, चलो देश मेरे संग, अहिंसा पथ, भरोसा तुम ही हो जवान, उसी देश के वासी, हडताल, शेर और हाथी, अंग्रेजी शिक्षा को पुकार आदि कविताएं प्रकाशित हई.

मॉरीशस के श्री बजद्र कुमार भगत ‘मधुकर’ का जन्म 2 सितम्बर,1916 को धारा नगरी, लॉग मौंटन मॉरीशस मे हआ. बजद्र कुमार भगत का मॉरीशस म स्वतंत्रता संग्राम म साहित्यिक द्रष्टि से बडा योगदान रहा है. उन्हों ने रेडियो दूरदशन के प्रसारण म और इसके अलावा कवि ने 35 जितनी अपनी रचनाएं प्रकाशित करवाई. ‘मधुपक’ बजद्र कुमार भगत का प्रथम काव्य संग्रह है. इस संग्रह म कुल 52 कविताओं का संकलन हआ है. प्रमुख रचनाएं- सरताज, देश हमारा, हमारा संदेश, झंडा गीत, बापू के गीत, जवाहरलाल, पथिक से, म, बढो, होगी जीत हमारी, नंगे रहते , हडताल, वोट, परदेशी, कौन लगावे पार आदि अनेक महत्वपूण कविताओं का संग्रह प्रकाशित हआ.

विषय वस्तु को द्रष्टि से समाज, हिंदी और स्वराज्य आंदोलन, शराब आंदोलन, मजदूरों, गद्दारों, सरकारी नौकरी, कामचोरों, अत्याचार, नारी आदि अनेक विषयों को लेकर कविताओं म अपने विचारों को व्यक्त किया. दूसरा काव्य संग्रह –“रागीनी”(1949) आया. इस संग्रह म 24 जितनी कविताएं संग्रहीत है. जो धामिक भावना से जुडी हई है. हिंदी भाषा का सरल रुप देखा जा सकता है, क्योंकि जन- जन तक भाषा को पहंचाने का मूल उद्देश्य भी रहा है. बजद्र कुमार भगत का ‘वीरगाथा’ काव्य संग्रह(1949)आया. मधुकरी(1953) काव्य संग्रह म 56 जितनी कविताएं संग्रहीत है. मॉरीशस और भारत को एक ही रंग म दिखाने का प्रयास हआ है. कविताओं म सुंदर देश हमारा, पंद्रह अगस्त, जय स्वतंत्रता, सात को महिमा, तब और अब, आदि अनेक कविताएं देखी जा सकती है. हमारा देश(1963),अमर संदेश(1963), गुंजन(1963), रसरंग(1963), घुरह, मौसा क सनेस(1963), रणभेरी(1967) यह संग्रह छद्मनाम(ब्रजभूषण माथुर) से कविताएं लिखी कुल 50 कविताओं का संग्रह है.

सन 1958 म 'भजनमाला' तथा 'छंद वाटिका' नामक दो काव्य -संग्रह पंडित हरि प्रसाद रिसाल मिश्र ने लिखे जो हिंदी, संस्कृत के विद्धवान थे. हिंदी अंग्रेजी और फ्रेंच के विद्धान सूयप्रसाद मंगर भगत तुलसी के रामचरित मानस से भी परिचित थे उनको 'लंदन म स्वयंवर' और 'नवजीवन' नामक कविताओं के संग्रह प्रकाशित हए.

डा.मुनीश्वरलाल चिंतामणि मॉरीशस के जाने माने प्रसिद्ध कवि और लेखक है. मॉरीशस के त्रिओले गांव म हआ उनका हिंदी भाषा के प्रति गहरा लगाव रहा, उसके साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के क्षेत्र म भी उनको अधिक रुची है. उनका 'शांति निकेतन को ओर' काव्य के माध्यम से मुक्त छंद का मॉरीशस म पहली बार प्रयोग हआ. 'प्रथम किरन'(1960) इस काव्य- संग्रह म गांधीजी के कदमो पर मॉरीशस को क्रांति को देखा जा सकता है. सत्य, अहिंसा, मानव प्रेम आदि भावनाएं और मानव मूल्यो को स्थापना अपने काव्यो म करते हए द्रष्टिगत होते ह.

मॉरीशस के वरिष्ठ कवि डा.मुनीश्वरलाल चिंतामणि 'मेरी हिंदी भाषा' शीषक कविता म घोषणा करते ह कि हिंदी ने हम भारतीयो को पहचान विदेश म बनाए रखी है|ऐसी हिंदी यदि गई तो हमारी पहचान समझिए चली गई.

"उस आदमी से जाकर कहो कि

मेरी हिंदी भाषा

एक ऐसी खूबसूरत चीज है

जिसने मेरी संस्कृति को

अब भी बचाए रखा है

मेरी हिंदी भाषा

एक ऐसी खूबसूरत चीज है

जिसने मेरी पहचान को

अब भी बनाए रखा है

उस आदमी से जाकर कहो कि

मेरी हिंदी भाषा को महानता का

वह अभिनंदन करे

मेरे पूवजो को त्याग तपस्या का

बार बार स्मरण करे

वह जान ले कि

उन पूवर्जा के प्रति मेरी श्रद्धा अपार है

उनका भाषा का रीढ़ को

टूटने नहीं दूंगा म

हिंदी जो गई तो म समझूंगा

संस्कृति भी गई

हिंदी जो गई तो म समझूंगा

अपनी पहचान भी गई (डा.मुनीश्वर लाल चिंतामणि:मेरी हिंदी)

श्री विष्णुदत्त मधुचंद का काव्य ‘रवि रश्मि’ (1961), ‘मॉरीशस भारती’(1966), ‘हास्य वाटिका’, इनके प्रमुख काव्य संग्रह है. मॉरीशस के निवासी हिंदी के साथ फ्रेंच , अंग्रेजी और क्रियोली के ज्ञाता कवि जयरुद्ध दोसिया का काव्य संग्रह ‘सुधा कलश’ जिसम कवि ने अनेक छंदा का प्रयोग बडी सहजता से किया है.

श्री सोमदत्त बखौरी का जन्म सन 1921 मॉरीशस के मॉताई लांग म हआ. उन्हाने ‘अनुराग’ पत्रिका का साथ अपना काय किया, तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन म उनका सम्मान भी हआ था. उनके प्रमुख काव्य -संग्रहा म ‘मुझे कुछ कहना है’(1967) बखौरी जी का प्रथम काव्य संग्रह है. लगभग 50 जितनी कविताओं का संकलन है. काव्य के संदभ म कवि कहते ह-

“लेकिन कुछ धरा है, बहत दिना से,

छंदा म बंधे-मुक्त बंधना से

देना यही है-यही सपना है

देना क्या है, मुझे कुछ कहना है.”

षष्ट कविया का काव्य -संग्रह- कवि सम्मेलन(1966)इंडियन कल्चरल एसोसिएशन द्वारा 6 कविताएं संकलित है. ये कवि- डा.मुनीश्वरलाल चिंतामणि, रवि कौलेश्वर, जयरुद्ध दोसिया, गौतम रिसाल, ब्रजद्र कुमार भगत, सोमदत्त बखौरी आदि.

मध्यकाल म राजनीतिक और सामाजिक सांस्कृतिक, धामिक भावनाओं और संघष जारी रहता है. उसी का एक प्रतिबिम्ब इस काल के काव्यों म दिखाई देता है.

- **<u>मॉरीशस का आधुनिक काल या स्वातंत्र्य काल का हिंदी काव्य साहित्य (सन 1968 से अब तक) –</u>**

मॉरीशस 12 माच, 1968 को स्वतंत्र हआ. मॉरीशस म 'वसंत' चयनिका म अभिमन्यु अनत के साथ स्वर मिलाते हए रामदेव धुरंधर नयी कविता के विद्रोही स्वर यूं ही व्यक्त करते हए कहते ह- " जब स्वतंत्रता प्राप्ति का स्वाद हमारे मनों म ताजा था तब हिंदी म लिखने का और भी साहस बुलंदी को छू लेना चाहता था, परन्तु तब हम भटकाव को स्थिति म थे. भटकाव के माने यह कि हम छायावादी भी थे, प्रेमचंदवादी भी, आदशवादी भी और न जाने क्या -क्या थे. इतने सारे वादों के बीच घिर जाने के बाद मुश्किल ही होता साहित्य को पहचान और अस्मिता को बनाये रखना. ऐसा भी था को हमारे तरुण लेखक लिखने के लिए विवश तो थे, लेकिन उन्ह समझ न आता था कि किस वाद का हाथ थामकर चल. क्या लिख ताकि साहित्य म अपना नाम बनाया जा सके ? यही वजह थी कि हमारे कवि 'वादों' को लीक पर चलने म सफल होते से तो लगे, लेकिन ठोस साहित्य लिखने म उनको कलम अधिक सशक्त प्रमाणित नहीं हो सको. देश म स्वतंत्रता नई थी, इसलिए हमारे लेखक केवल चौरंगे झंडे का सम्मोह पाले हए थे, क्योंकि हमारे पूवजों को त्याग तपस्या का सद्परिणाम था वह झंडा.

किन्तु यहाँ से मोहभंग को जो शुरुआत हई थी, उस पर आज हम संदेह नहीं होना चाहिए.

कवियों, लेखकों ने देखा कि चौरंगा झंडा तो हमारे स्वाभिमान को आकाश म फहरा रहा था, लेकिन धरती पर एक कटु यथाथ को पृष्ठभूमि तैयार होते बिलकुल देर नहीं लगी. जनता ने स्वाधीनता को जो परिभाषा कल्पना म निधारित कर रखी थी. उस पर संशय को पत गाढ़ी तो होती ही."(७)

भारत के समान ही मॉरीशस म भी स्वतंत्रता के बाद मोह भंग को स्थिति का निमाण हआ. हताशा, निराशा, असमानता, विषमता,असंगति, विसंस्कृतिकरण, महंगाई, भ्रष्टाचार, फिजूल खर्चो, बेकारी आदि अनेक समस्याओं से आदमी जूझने लगा और यही सारी विसंगतियां काव्य साहित्य म भी आई.

स्वातंत्र्यकालीन कवियों ने आजादी के बाद अपने स्वर म देश को तत्कालीन परिस्थिति को साहित्यकारों ने अपने काव्य म स्वर दिया है.

- **<u>व्यक्तिगत काव्य संग्रह –</u>**

व्यक्तिगत काव्य संग्रह के अंतगत स्वतन्त्रता से पहले भी ब्रजेन्द्र कुमार भगत मधुकर ने अपना योगदान दिया और स्वतंत्रता के बाद भी अपना विशेष योगदान दिया. उनका काव्य संग्रह "स्वराज्य गीतांजलि"का प्रकाशन (१९६८) म हआ और "एक कहानी कुली को"सन (१९६८) मॉरीशस म मजदूरों को यातनाओं को वाचा दी है. "हिंदी गौरव गान" सन (१९६९) इस काव्य संग्रह म कुल १० कविताएँ प्रकाशित हई है. "मधुकलश" काव्यसंग्रह म मॉरीशस के ८१ भोजपुरी ग्राम गीतों का संग्रह है. "सर शिवसागर रामगुलाम" काव्य-संग्रह म प्रधानमंत्री सर शिवसागर

रामगुलाम के जीवन संघर्षों का चित्रण किया. "मधुवन" सन (१९७०), "रसवंती" सन (१९७०), "मधुमास" सन (१९७१), "मधुचक्र" सन (१९७३), "गोस्वामी तुलसीदास"(१९७३), "स्वागत गान" (१९७६), "जय हिंदी" सन (१९७६), "मधुदीप" सन (१९८४), "अमर कुली गाथा" "मधु श्री"सन (१९८५), "मधुबाण" सन (१९८८), "माधुरी"(१९८८), "मधु गुंजार"(१९८९), "मधु व्यंजना"(१९८८) आदि कहानी संग्रह है.

मोहन लाल हरदयाल का काव्य संग्रह "तरंगिणी" आया. इस काव्य संग्रह म कुल १४ कविताओं का संग्रह है. श्री हरिनारायण सीता का "प्रभात" (१९६९)काव्य-संग्रह है. पंडित राम रत्न रिसाल मिश्र का "बिखरे सुमन" (१९६९) जिसके अंतगत ५७ कविताओं का संकलन है.

मॉरीशस के जानेमाने कवि सोमदत्त बखौरी का काव्य -संग्रह सन १९६७ म "मुझे कुछ कहना है" ये कवि ऐसे है जिन्होंने नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच सेतु का काम कर रहे ह. "बीच म बहती धारा" म कुल ५० कविताएँ है. "नशे को खोज म" सन (१९८१), "सांप भी सपेरा भी" (१९८२), आदि.

- **<u>अभिमन्यु अनत को कविताएँ-</u>**

अनत जी हिंदी के साथ साथ फ्रेंच और अंग्रेजी के भी विद्वान ह. हिंदी के प्रेमचंद, रेणु, और शरतचंद्र के साहित्य को सराहकर उन्हों ने सशक्त साहित्य को रचना को है. "अनत जी को मॉरीशस का कथा सम्राट एवं 'प्रेमचंद' कहा जाता है. दूसरे शब्दों म अनत जी भारत के 'प्रेमचंद' ह." (८) अनत जी ने स्वयं लेखन काय किया और साथ म अन्य लेखकों के भी प्रेरणा स्रोत रहे ह. हिंदी के भारतेन्दु और महावीर प्रसाद द्विवेदी को तरह अपने मॉरीशस म अपना हिंदी का नया साहित्य लिखा. कहीं कबीर को तरह खुलापन तो कहीं निराला को तरह विद्रोहात्मक लेखन भी है. कहीं प्रेमचंद जैसी सामाजिक समस्याएं तो जयशंकर प्रसाद को तरह भारतीय वंशी के इतिहास को दोहराते हए द्रष्टिगत होते है. बहमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी अभिमन्यु अनत जी ने हिंदी को भारत से बाहर भी ऊँचा स्थान दिलाया. अभिमन्यु को प्रमुख रचनाएं –

"गुलमहोर खौल उठा", वह अनजान आप्रवासी, आशाएं, मेरे महबूब, समानता, विवशता, आधुनिक उपलब्धियां, दीवार, प्रतिमान, विश्वशांति, इन्द्रधनुष का देश",खामोशी

"नागफनी म उलझी सांसे"- खाली पेट ,अधगले पंजरों पर, ताजा खबर, कितना कठिन "दीमकों का जुलूस वर्त्तमान रस्सी का निशान,और अब

"केक्टस के दांत", "एक डायरी बयान" "अधगले", " इतिहास", "और अब", "खाली", "ताजा खबर", "दोपहर", "ध्वजारोहण", "प्रतिमान", "मेरे महबूब", "रस्सी का निशान", "वर्त्तमान", "वह अनजान आदमी", आदि.कुछ प्रतिनिधि रचनाएं – इश्तहारों के वायदे,दोपहर को रात, निशुल्क मौत, ध्वजारोहण, वह अनजान आदमी.

अभिमन्यु अनत ने अपने काव्य के हेतु के लिए अपनी कविता “एक डायरी बयान” म लिखा –

“मेरी कविता के शब्द /भारी गहराइयां रहस्यां/बड़े –अर्थां –दशर्नां को/

अपने म छिपाए नहीं होते/अपने ऊपर से/अंगारां का पहाड़ हटाकर

ऊपर आये मेरे ये शब्द/ख़ाक होने से बच पायी/उस प्रक्रिया को

बस उष्णता लिए है अपने भीतर/ मेरी यह अभिव्यक्ति

ज्वालामुखी के बहते लावो के बीच से/बच आयी/उस व्यक्ति के माथे को बूंद है

जो बस्ती को ओर/लपक रही ज्वालामुखी को दिशा को/बदल देने को उस प्रक्रिया

खुद तरल अंगारां म/परिवतित हो गया था/मेरी कविता के शब्द

समुद्र किनारे के/बेशुमार रेत-कणां के बीच/वह् कण है/जो

ज्वार भाटां को हवश का शिकार/ उस नन्ही लहर को आँखां से

टपक कर/जम गया है/उस अस्तित्व रक्षा को चाह म

जिसको जिजीविषा म मिले/बेशुमार खोखले उतरां का

मेरी कविता का प्रश्न है (९)

अभिमन्यु अनत को कविताओं म शोषण, दमन और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई. समसामयिक परिस्थिति को देखकर कवि कहते ह-

“जिस दिन सूरज को

मजदूरां को ओर से गवाही देनी थी

उस दिन सुबह नहीं हई

सुना गया कि

मालिक के यहाँ को पार्टी म

सूरज ने ज्यादा पी ली थी”

अपने काव्य “खामोशी” म पूवर्जा को वेदना को वाचा दी है कैसे अत्याचारां वाले दिन काटे होंगे. कितनी यातनाओं को सहा होगा. उस दद को बयान करना आसान नहीं है.

"मेरे पूवर्जा के सांवले बदन परजब बरस पड़े थे कोड़े

तो उनके चमड़े

लह लुहान होकर भी चुप थे चीत्कारता तो था

गोरे का कोड़ा ही

और आज भी

कई सीमाओं पर

बंदूक ही तो चिल्ला –कराह रही है

भूखे नागरिक तो शांत सो रहे ह."(ख़ामोशी काव्य)

जब कि "विवशता" काव्य म अभिमन्यु अनत ने हदय द्रावक चीत्कार को पहचाना है.

"तुम्हारी ददनाक चीख सुनकर

म जान तो गया कि सरकस का शेर

दीवार फांदकर

पहँच गया तुम्हारे घर के भीतर

अपने बगीचे के फलां को

मेरे बच्चां से बचाने के लिए

तुमने खड़ी कर दी है जो ऊँचे दीवार

उसे म नहां कर पा रहा पार

तुम्ह शेर से बचा पाने

म नहां पहँच पा रहा"(विवशता कविता)

आप्रवासीयां का दद शब्दां म बयान नहां हो पाए उतना है, लेकिन अभिमन्यु अनतजी ने उसे महसूस कर के उन लम्हां को कैसे झेला होगा ? उन पूवर्जा ने कैसे जीवन जिया होगा? इस कविता म देखा जा सकता है

"वह अनजान आप्रवासी"

आज अचानक हवा के झोंको से

झरझरा कर झरते देखा

गुल्मोहोर की पंखुड़ियों को

उन्हे ख़ामोशी में झुलसते छटपटाते देखा

धरती पर धधक रहे अंगारों पर

फिर अनलिखा इतिहास मुझे

इतिहास की राख में छुपी

गन्ने के खेती की वे आह याद आ गयी

जिन्हे सुना बार –बार द्वीप का

प्रहरी मुड़िया पहाड़ दहल कर कांपा

बार बार डरता था वह भीगे कोड़ों की बौछार से

इसलिए मौन साधे रहा

आज जहाँ खामोशी चित्कारती है

....

हिन्द महासागर की लहरों से तैर कर आई

गंगा की स्वर लहरी को सुन

फिर याद आ गया मुझे वह कला इतिहास

उसका बिसारा हआ वह अनजान आप्रवासी देश के

अंधे इतिहास ने न तो उसे देखा था

न तो गूंगे इतिहास ने कभी सुनाई उसकी पूरी कहानी हम

न ही बहरे इतिहास ने सुना था

उसके चीत्कारों को

जिसको इस माटी पर बही थी

पहली बूंद पसीने को

जिसने चट्टानों के बीच हरियाली उगाई थी

नंगी पीठों पर सह कर बांसों को

बौछार बहा बहाकर लाल पसीना

वह पहला गिरमिटिया इस माटी का बेटा

जो मेरा भी अपना था तेरा भी अपना था" (वह अनजान प्रवासी)

"निशुल्क मौत"

शीश महल-सा विशाल अस्पताल,

चिकने चमकते गलियारे म खांसते लंगड़ाते,

कराहते कांपते रोगियों का हजूम,

सुस्त चाल म इधर से इधर मंडराती,

लोगों के दर्दों के बीच खिलखिलाती,

चहकती इठलाती बीमार परिचायिकाएं,

सुबह पांच बजे अपने घर से निकली,

बिन खाए बिन पिए थर थर काँप रही,

बाईस मील केसफ़र के बाद पहंची वह बुढ़िया,

लकड़ी को बच पर बैठे,

साढ़े पांच सख्त घंटे बीत चुके,

पिछली बार खाली शीशी लिए लौट गयी थी,

अस्पताल म दवा नहीं थी,

उससे पहले थी डॉक्टरों की हड़ताल,

बीमार डाक्टर नियत वक्त से,

तीन घंटे बाद पहंचा,

उसकी प्रतीक्षा म बैठे पतीस रोगियों ने,

एक साथ राहत की एक सांस ली,

परिचायिका को भीतर करके डाक्टर ने दरवाजा बंद कर लिया,

घंटों इंतज़ार करके लोगों को पीछे से,

पन्द्रह मिनट बाद दरवाजा खुला,

परिचायिका बालों पर हाथ फेरती,

हंसती हई बाहर आयी,

भीतर से लायी हंसी को निगल कर,

दरवाजे के पास खड़े,

विशेष रोगियों म से एक को भीतर भेजा,

पन्द्रह मिनट बाद फिर दूसरे को फिर तीसरे को,

साढ़े पांच घंटों से बैठी वह बुढ़िया,

लकड़ी की बच पर कराहती रही,

पांच घंटों से बैठा एक बीमार जवान बोला,

हम लोग पहले से आये है, ये लोग बाद म,

परिचायिका झुंझलाई,

म तुम्हारे हक्म से काम नहीं करती,

और डाक्टर के घर से होकर आये हए,

उन विशेष रोगियों को,

डाक्टर की दुकान म एक- एक करके भेजती रही,

दो घंटे बीत गये,

लकड़ी की कठोर बच पर,

पतीस गरीब रोगी इंतज़ार करते रहे,

बाईस मील की दूरी से पहंची,

साढ़े सात घंटों से प्रतीक्षा कराती वह बुढ़िया,

लड़की की सख्ती पर लुढ़क गयी,

सरकारी अस्पताल म,

डाक्टर की दूकान की सरगर्मी बनी रही,

पड़ा रहा निश्छल लकड़ी की बच पर,

प्रतीक्षा का ठंडा जीवन,

और ऐसा तो कई बार हो जाता है.

अस्पताल के बाहर कुत्ते मरते रहते ह

आदमी तो अस्पताल के भीतर है.

मॉरीशस म सुविधा के अभाव म मजदूरों के हालत और भी ख़राब हो रहे थे जिससे बिना इलाज के ही मजदूरों की मौत हो रही थी. दिन रात कम करने के बाद भी उनके साथ पशुवत व्यवहार होता था. अभिमन्यु जी की "अधगले पंजरों पर" काव्य म एक और दद का बयान करने वाला काव्य है. अनत जी की संवेदन शीलता और सहानुभूति काव्य म झलक रही है.

"भूकंप के बाद ही

धरती के फटने पर

जब दफनायी हई सारी चीज

ऊपर को आयेगी

जब इतिहास के ऊपर से

मिटटी की परत धुल जायेगी

मॉरीशस के उन प्रथम

मजदूरों के

अधगले पंजरों पर के

चाबुक और बांसों के निशान

ऊपर आ जायगे

उस समय

उसके तपिश से

द्वीप की सम्पतियों पर

मालिकों के अंकित नाम

पिघलकर बह जायगे

पर जलजला उस भूमि पर

फिर से नहीं आता

जहाँ समय से पहले ही

उसे घसीट लाया जाता है

इसलिए अभी उन कुलियों के

वे अधगले पंजार पंजर

जमीन की गद म सुरक्षित रहगे

और शहरों की व्यवसायिक संस्कृति के कोलाहल म

मानव का क्रन्दन अभी

और कुछ युगों तक

अनसुना रहेगा

आज का कोई इतिहास नहीं होता

कल का जो था

वह जब्त है तिजोरियों में

और कल का जो इतिहास होगा

अधगले पंजरों पर

सपने उगाने का

अभिमन्यु अनत की 'नागफनी म उलझी सांसे' (१९७७) इस काव्य- संग्रह म कुल ४० कविताएँ प्रकाशित हई है. कवि ने ऐतिहासिक बोध,आथिक विषमता ओं, राजनीतिक कटु व्यवस्था, मालिक मजदूरों के अंतर, पूंजीवाद व्यवस्था, भ्रष्टाचार आदि पर अभिमन्यु अनत जी करारा व्यंग्य करते है. अनत जी की गुणगा इतिहास,गिरवी सुन्दरता,हर दूसरे क्षण,अनफूला कैक्टस, चाँद की परछाई, लम्बी मृत्यु इतिहास की, कितना कठिन , उठे हाथ, चौरंगे की कफ़न, खाली पेट, सूरज की गवाही, फिर भी, आदि सशक्त कविताएँ है. सूरज कविता म मुनाफाखोरी के चलते सब को एक ही लाठी से न्याय मिल रहा है उससे जुडी कविता देखिये

"जिस दिन सूरज को मजदूरों की ओर गवाही देनी थी

उस दिन सुबह नहीं हई सुना गया कि

मालिक के यहाँ पार्टी म

सूरज ने ज्यादा पी ली थी"

देश की उन्नति के लिए झूठे किये जाने वाले वायदों से कवि त्रस्त हैऔर कहीं चेतावनी देते हए कहता है

"विषैले संतोष को पीते-पीते अब म निर्जीव हो चला हँ लेकिन

मेरी धुकधुकी साँसों की बौराई हई ख़ामोशी पता नहीं कब गरज उठे

जिससे तुम्हारे भीतर के आकार पाते भेडिये का गभपात हो जाये"

और आगे कहते है –

"तुम्हारा यह दावा कि तुम देश की उन्नति के लिए

सबसे कठिन काय करते हो मेरी नज़रों म कोई अथ नहीं रखता

उन्नति अवनति को छोड़ो मेरी तरह नौकरी की तलाश म लगकर

फिर बताओ, कौन काम कठिन है."

देश के विकास के लिए झूठे वादे का सच कवि लाते है.

कैक्टसके दांत –(१९८२)

अभिमन्यु अनत का दूसरा काव्य संग्रह है. इस संग्रह के अंतगत कुल ८८ कवितायेँ संग्रहित है.

गुलमहोर खौल उठा –

वह अनजान प्रवासी, आशाएं, मेरे महबूब, समानता, विवशता, आधुनिक उपलब्धियां, दीवार, प्रतिमान, विश्वशांति, इंद्र धनुष का देश ख़ामोशी, गुलमहोर खौल उठा आदि कविताओं के माध्यम से अनतजी ने तत्कालीन और ऐतिहासिक दद को उभारा है.

- **आधुनिक भावबोध की मॉरीशस म नयी कविता --**

आधुनिक युग की कविताओं म युग के साथ भाव भी बदले ह. अभिमन्यु जी कहते ह – "आज की कविता जहाँ छटपटाहट लिए विरोध कराती है वहां प्रश्न भी उछालती है. पर इससे भी बड़ी भूमिका आज की कविता की यह है कि वह अपने सामने के घटाटोप या कुहासे को इस तरह चीरकर आगे निकलती है जिससे सामने की वे सारी चीज जो अब तक अँधेरे म छिपी हई थी सामने स्पष्ट दीखने लग जाती है."(१०) मॉरीशस की कविताओं म स्वतंत्रता से असंतुष्ट और अंसतोष का भाव ने जनम लिया है.

'कभी म चकित होता था

जब उलटी गंगा बहती थी

और अब तो लगता है कि

दूसरी तरह वह बह नहीं सकती'

आम आदमी की बेबशी और उसका सत्य हेमराज जी की कविता म देखा जा सकता है.

अब म भी तुम्ह पहचान गया हँ

और यह जान गया हँ

कि तुम कितने पानी म हो

म यह भी जान गया हँ

कि यहाँ माँगने से कुछ भी

प्राप्त नहीं होता है

इसलिए म गढ़ रहा हँ

अपने हाथों को मजबूत

ताकि सुलगती मशाल लेकर

तुम्ह नंगा कर सकूँ

बीच सड़क पर.

जब कि दूसरी कविता म "कुरुक्षेत्र कहाँ" के माध्यम से एक नया कल्पना लोक का निमाण करते ह.

मुझे किसी दूर दराज को जगह ले चलो

जहाँ नया क्षितिज हो नये वृक्ष हो

नये पक्षी हों नया कलरव हो

जहाँ आसमान नया और अनदेखा हो

जहाँ मृगजल न हो

जहाँ प्रतिध्वनि से आदमी बहरा न हो.

साबिर गूदर "इतिहास के पन्नों से" भेदभाव को दीवारों को बजाय अमन, शांति और प्यार को तलाश करते ह.

'खेतों –खलिहानों म हरियाली थी

मवेशी और जानवर मोटे तगड़े थे

सेहतमंद था हर छोटा बड़ा

हाँ, उस नगरी म प्यार ही प्यार था

बड के दरख्तों तले प्यार था

दुकानों को छतों तले प्यार था

बैठका ओं मदरसों म प्यार था

कहावतों लोकगीतों और कहानियों को

एक खूबसूरत नगरी थी वो

उसी नगरी को तलाश है मुझे'

भाषा और संस्कृति को बचाने के लिए कवि कुछ भी करेगा. मॉरीशस म भाषा का विकास और संस्कृति के संरक्षण को चिंता साहित्यकार को रचना म द्रष्टिगत होती है.

डा.वीरसेन जागासिंह को कविता है –

भाषा है यह कुलियों को

अनपढ़ कंगाल गंवारों को

मान्यता नहीं भारत देश म

रखगे कैसे उसे परदेश म

कैसी मान्यता मारीच देश म?

हिंदी माँ को है सौगंध

नहीं हई जो मांग संपन्न

हिंदी को पूरी मान्यता को

इस मातृभूमि मॉरीशस म

मचा दगे महा क्रांति

बस करगे शांति शांति

हिंदी को महत्ता को बताते हए कवि मुकेश जी बोध कहते है

हिंदी

सिफ घिघयाने

मिमियाने

चिलम भरने

जूता चाटने को भाषा नहीं

हिंदी लात देने को

घात करने को

क्रांति करने को

खाँखने खखारने को भी भाषा है.

मॉरीशस की हिंदी और भाषा के संदभ म भी लिखा गया है तो दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियों का भी पदाफाश किया है. कवि दानीश्वर श्याम की कविता “मीरा का इतिहास” म नारी की विवशता और उसके जीवन की लाचारी को भी व्यक्त किया है.

यही कारण है

मौसी ने लड़की के जनमते ही

वैश्या कह डाला था

कहा था

तू पतुरिया है बेटी

कन्या कहाँ

तू तो वैश्या है

कहाँ होता वह जो तू सोचती है

कहाँ होता है वह जो तू चाहती है

कहाँ होता वह जो तू करना चाहती है.

- **<u>कवियों का सामूहिक काव्य संकलन –</u>**

1.गाँधी स्मृति –(१९६९)
२.मॉरीशस की हिंदी कविता –(१९७०)
३.आकाश गंगा -१९७०
४.प्रवासी स्वर –(१९७१)
५.सुरभित उधान –(१९७३)
६.नन्हे दीप –(१९७४)
७.मॉरीशस की हिंदी कविता –(१९७५)
८.तरंगिनी -–(१९७६)
९.विचार बीथिका -–(१९७७)
१०.हिंदी पद्य पराग –(१९७९)

११. विश्व दपण –(१९८१)

१२.आशा दीप –(१९८३)

१३.मॉरीशस के नौ कवि –(१९८८)

उपयुक्त काव्य संकलनो म अनेक विषयां को लेकर कवियां ने काव्य लिखे देश का विविध परिस्थिति और जनता का स्थितियां का वास्तविक चित्रण किया है.

1.**गाँधी स्मृति –(१९६९)** इस काव्य संकलन म कुल १७ कवियां का रचनाओं को शामिल किया है. गांधीजी के जन्म शताब्दी के अवसर पर उनका यादां को संजोया है.

२.**मॉरीशस का हिंदी कविता** –(१९७०)- इस काव्य संकलन म कुल आठ कवियां का प्रमुख कविताओं को प्रकाशित किया गया है. सोमदत्त बखौरी, अभिमन्यु अनत, इंद्र देव भोला इंद्र, मोहनलाल बृजमोहन, हरि नारायण सीता, वेणी माधव रामखेलावन, मधुकर, मोहन लाल हरदयाल आदि का कविताओं को संकलित किया गया है.

३.**आकाश गंगा** -१९७० - आकाश गंगा -१९७० म प्रकाशित काव्य- संग्रह के संकलन के संपादक पूजानंद नेमा जी है. इस संकलन म कुल आठ कवियां का रचनाएं संकलित है.24 कवितायें प्रकाशित हई है. इंद्र देव भोला इंद्र देव, धमवीर धूरा, श्रीमती लखावती हर गोविन्द, पूरण लाल गुरविन, नेमा सूयदेव सिबरत, महिदत्त नेमा,कुमारी शोभाराममगुलाम आदि का रचनाएं प्रकाशित हई. पूजानंद नेमा का जीवन ही अभाव ग्रस्त परिस्थितियां म गुजरा शिक्षा भी ठीक से नहां हो पाई. मॉरीशस म मजदूर मालिक और गोरे और काले म अंतर समझ म आने लगा था कारोल तूफान ने उनके लेखन को भी एक नया मोड़ दे दिया जीवन म बेकारी और पीड़ा ने बहत कुछ सिखा दिया. अपने रोगग्रस्त पुत्र के ऊपर जब दवाई का असर नहां हआ तो पूजा अचना म ठीक होने से आध्यात्मिकता का ओर झुकते है.

४.**प्रवासी स्वर** –(१९७१)-इस काव्य संग्रह म मधुकर बखौरी, कौलेश्वर, ठाकुर दत्त पाण्डेय, अनत, जनादन कालीचरण, हरिनारायण सीता, मुनीश्वर लाल चिंतामणि, इंद्र देव भोला इन्द्रदेव, हर दयाल बृजमोहन आदि.

५.**सुरभित उधान** –(१९७३)- इस संकलन म निबंध, कविता, कहानी आदि म संकलित है.

६.**नन्हे दीप** –(१९७४) इस संकलन म दो खण्डां म विभाजित है- काव्य और कहानी. चंदा रघु, लोक प्रकाश हीरू, सुरेन्द्र गोपाल, नरमदा धनुकचंद, देव प्रकाश पति, भावेश हीरू, अमरीता मेवा, यशवंत चूडामणि आदि कवियां के काव्य संग्रह किए गए ह.

७.**मॉरीशस का हिंदी कविता** –(१९७५)-

इस संकलन म कुल बारह कविताएँ संकलित का गई है. सूयदेव सिबरत, नारायणदत्त दसोई, महेश रामजियावन के अतिरिक्त सभी कवि जो प्रवासी स्वर के कवि ह. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के ज्वार म उमड़ने और काव्य के माध्यम से देश का विडम्बनाओं को पहचानने का अनुगूँज इस सांकल का कविताओं का प्रमुख विशेषता रही है.

८.**तरंगिनी** –(१९७६)

इस काव्य संकलन म देवननन, हेमराज, सत्यानन्द फेकू, रामदेव हेमराज, धनराज शम्भू, देवानंद पूरण, हेमंतलाल गणेश, विनय गुरिया, मुकेश जी बोध आदि कवियों को रचनाएं प्रकाशित हई है.

९.**विचार वीथिका** (१९७७)

सूयप्रसाद मंगर भगत का कविता संग्रह है. कुल 22 कविताएँ संकलित है.

१०.**पद्य पराग** (१९७९)

इस काव्य संकलन म भारतीय और मॉरीशस के कवियों का संग्रह है.

११.**विश्व दपण** (१९८१)

इस काव्य संकलन के संपादक श्री बलवंत सिंह नौबत सिंहजी है. अंग्रेजी सोनेट, जापानी हायकू तथा नवगीत आदि का प्रयोग हआ है. नेमा जी "कारोल तूफान" कविता म प्रतीकों और बिम्बों को प्रस्तुत किया है.

१२.**आशा दीप** (१९८३)

'आशा दीप' काव्य संकलन म 23 कवियों को रचनाओं को स्थान मिला है.

१३.**मॉरीशस के नौ कवि** (१९८८)

अभिमन्यु अनत इस काव्य संकलन के संपादक है. सोमदत्त बखौरी, पूजा नन्द नेमा, हेमराज सुन्दर, सुमति संधू, हरिनारायण सीता, सूयदेव सिबरत, महेश रामजियावन, मुकेश जी बोध, अभिमन्यु अनत आदि.

मॉरीशस म वसंत और इन्द्रधनुष इन दो पत्रिकाओं का हिंदी कविता म बहत बडा योगदान है. 'वसंत' महात्मा गाँधी इंस्टीट्यूट से प्रकाशित हो रही है उसके संपादक अभिमन्यु अनत है, जब कि इन्द्रधनुष के संपादक प्रहलाद रामशरण जी है, और जनादन कालीचरण जी है. इन पत्रिकाओं म कहानी, कविता, लेख, भटवाता, जीवनी, पुस्तक समीक्षा आदि प्रकाशित होता रहा है.

आधुनिक युग और कविताओं म मॉरीशस के स्थापित कवियों म राज हिरामन, धनराज शंभू आदि काव्यों ने विविध पक्षों को उजागर किया है.

- **<u>मॉरीशस के हिंदी काव्य म इतिहास, संघष और वेदना-</u>**

आधुनिक काल के प्रमुख कवियों का हिंदी साहित्य म विशेष योगदान रहा है. आधुनिक युग सूचना का युग है जब प्रकाशन को समस्या ने भारतवंशीयों के सामने बाधाएं डाली तो इंटरनेट का सहारा लिया और अपनी आवाज को भारत तथा अन्य देशों तक पहंचाया. इंटरनेट पर मॉरीशस के हिंदी काव्य घर नाम से कवियों को रचना शमिल की गई है. इस वेबसाइट पर निम्न कवियों का परिचय एवं कविताएं दी है. निम्नांकित कवियों का परिचय इस प्रकार है-

अभिमन्यु अनत, अमरावती बाबूलाल, अनीता ओजायब, अजय मंगरा, अजामिल माताबदल, अरविंद्सिंह नेकितसिंह, इंद्र देव भोला, इंद्रनाथ, कल्पना लालजी. कृष्ण रामलगन, दयानंद चगी, दानीश्वर श्याम, धनराज शंभु, नारायणपत दसोई, पूजानंद नेम, पुष्पा बम्मा, बीरमेन जागासिंह, बृजलाल रामदीन करुण, रश्मिलाल

बिहारी, राजवंती मातादीन नेहा, राज हीरामन, लक्ष्मण देवी, वशिष्ठ कुमार झमन, साबिर गूदर, साहेबा फजली, सूयदेव सिबोरत, संध्या सदासिंह, सोमदत्त बखौरी, गाजिल मंगलू, चंद्र मोहन सोरिफा, जनादन कालीचरण, जय जीउत, ठाकुरदत्त पांडेय, ब्रजद्र कुमार भगत मधुकर, भानुमति नागदान, मधु गजाधर, महेश रामजियावन, मुकेश जीबोध, मुनीश्वरलाल चिंतामणि, सुमति बूधन, सलिल तोपासी, हरिनारायण सीत, हेमंत गणेश, हेमराज सुंदर आदि. निम्नलिखित कवियों ने हिंदी साहित्य को अति समृद्ध किया है, भारतवंशीयों ने अपने देश के प्रति ऋण चुकाया है. इन रचनाओं के माध्यम से और हिंदी साहित्य को महत्व पूण योगदान दिया है. अजय मंगरा 'दुभाग्य', आत्मनिभरता, अरविंदसिंह नेकितसिंह धारा के साथ, रोज, बंदर की गुलाटी, मेरे दोस्त, मेरा यथाथ, शव शय्या, पांच पैसों का सिक्का,मां के सपने, मां,प्रयास आदि कविताएं आई. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ वरदान, वसुंधरा, विध्या धन, महकती रात, जो पदाक्रांत हए, गाये हम गीत, चंदा मामा चंदा मामा, चौरंगा थामे आओ खेल खेले, हम हंसते-गाते आदि. कल्पना लालजी की कविताएं खामोशी, ग्यारह सितम्बर की याद मे, मौन निमंत्रण, बीते पल, होलिका पूजन, अम्म, आत्म ज्ञान, दहलीज, मां, दद, दीवार, याद, आंसू, खुशियां, युग परिवतन, पीडा, सच्चाई, पंचतत्व, बचपन, हाहाकार, अभिशाप, मधुर स्मृतियां, शांति दिवस, मानव जीवन, अंतद्वन्द आदि कविताएं

जीवन की मायूसी की बात गाजिल मंगलू की रचना म देखा जा सकता है.

'मायूसी'

" खुद भी लाल कफन ओढे हए

वह देखो सूरज डूब रहा है

घंटों पहले अरमानों को

लुढकाते हए अब डूब रहा है

कल यह सूरज फिर निकलेगा

कल भी उन अरमानों का

नाहक खून दोबारा होगा

खुद भी ला कफन ओढे हए

वह देखो सूरज डूब रहा है

कवि जनादन कालीचरण के काव्य प्रकाशन म प्रथम रश्मि,वसंत विहार और उनकी प्रमुख कविताएं पूवजों को प्रणाम, शाप नहीं वरदान, दिन की शाम जब ढल जाती है, गणतंत्र के संदेश, उद्धारक मणीलाल, डोडो, म भी अगर पंछी होता, मेरी वष गांठ, तूफान, बसंती बहार आदि. जनादन कालीचरण की कविता

“पूवर्जा को प्रणाम”

मेरे देश का बंजर धरती को

मधुवन-सा उपवन बनाने वाले

उन शत-बंद पूवर्जा को

मेरा सौ बार प्रणाम

पीटः पर कोर्डा का मार सह सह कर

रक्त से अपने इस मिट्टी को साँच कर

पत्थर से निदय गोर्रा का जेब भरकर

जिन पूवर्जा ने हम दिया है सम्मान

उनको मेरा सौ बार प्रणाम

थे वे दुख के पवत वहन करनेवाले

खून के घूंट चुप पी जाने वाले

हर प्रलोभन को ठोकर माकर

जिन पूवर्जा को स्वधम का था अभिमान

उनको मेरा सौ बार प्रणाम

जब शयद भाग्यन था साथ उनके

तप्त आंसू का धार पी-पी कर

रामायण का तलवार हाथ लिये

जिन पूवर्जा ने छेडा था स्वतंत्रता का संग्राम

उनको मेरा सौ बार प्रणाम

मॉरीशस के पूवर्जा को जो यातनाएं हई उसका चित्र है जिस प्रकार उनके साथ व्यवहार हआ जो पीडाएं दिन रात झेली उसका कोई हिसाब नहां है. उसी के संदभ म उद्धारक मणिलाल काव्य म भी मणिलाल के योगदान का जिक्र हआ है.

इतिहास के पन्नों पर

जब छाया था अमा का अंधकार

दासता की लोह- बेडी म जब

जकडे थे बाप-दादे हमारे

खून की घूंटपी पी कर जब

सह लेते थे वे सब

नंगी पीठ पर कोडों की बौछार

आये थे करने तुम उनका उद्धार

गांधी से नव प्रेरणा का जल पाकर

गुजरात के लाल मगनलाल मणिलाल

स्वाथ-लोभ की होली जलाकर

साहस का संबल हाथ लिये

ज्ञान के मजबूत हथौडे से

निदय- निष्ठुर गोरों के शिकंजों को

तोडने सागर के इस पार

आये थे करने पूवजों का उद्धार.

आये थे देश से आये कुलियों को

नवोत्थान का शुभ संदेश देने

अन्याय-रात्रि के सूने प्रांगण म

मानव-मुक्ति की किरण फैलाने

हिंदुस्तानी पत्रिका चलाकर

करते थे हिंदी का प्रचार

आये थे करने पूवर्जा का उद्धार

दक्षिण के इस मारिच द्वीप म

गोरा का शक्कर का लंका म

पवन पुत्र वीर हनुमान के जैसे

अशोक वाटिका म घुसकर

जूझ जाते थे दुश्मना से अकेले

तोड देते थे उनके तक के तार

आये थे करने पूवर्जा का उद्धार

ओ मेरे निर्भाक वीर सेनानी

मॉरीशस म मुक्ति के बीज बोने वाले

दबे हए ह तुम्हारे उपकारा से

आती है जब जब याद तुम्हारी

तुम्हारीचढा देते ह श्रद्धा के फूल बार-बार

आये थे करने पूवर्जा का उद्धार

मुनीश्वर चिंतामणि मध्यकालीन काव्य म भी योगदान है और आधुनिक काल म भी इनका प्रमुख रचना ओं म नवनिमाण का बेला (१९७२) इस काव्य संग्रह म कुल ६ कवितायेँ है.ध्वनन (१९८९) काव्य संग्रह म ३७ कवितायेँ है इन कविताओं म इतिहास का दद और वेदना का समावेश हआ है.

कवि कहते है –

अगर जीवन के अँधेरे म कुछ प्रकाश कण देने को

कविता आ जाये तो उस कविता का स्वागत है

मेरे सहयात्रिया अगर बबरता और शोषण के विरुद्ध

सुख अंगार का तरह तमतमाती हई कविता आ जाये

तो उस कविता का स्वागत है मेरे सहयात्रिया

अत्याचार से त्रस्त मानव को पुकार बनकर गरजती हई

कविता आ जाये तो उस कविता का स्वागत है

कवि ने बिम्ब और प्रतीकों का सुनियोजन किया है और पौराणिक विषय वस्तु को भी लिया है. विष्णु दत्त मधु 'चन्द्र' के काव्य संग्रह रवि रश्मि,मॉरीशस भारती दोनों मध्यकालीन काव्य संग्रह है और आधुनिक काल के काव्य म हास्य वाटिका (१९७३) इस काव्य संग्रह म कुल ३२ काव्य प्रकाशित है.चितरंजन ठाकुर का काव्य संग्रह "मुहब्बत को राहों म" दो खण्डों म कुल २७ जितने काव्य है.परमेश्वर बिहारी शिवरतन का "अभिशाप" काव्य संग्रह म १५ कविताएँ छपी है.ठाकुर दत्त पाण्डेय के प्रमुख काव्य संग्रह निशा, पुष्पांजलि,आलोक, प्रणाम तथा घुमता चक्र आदि.

हेमराज सुन्दर को आशा दीप,अनुराग, नवीन दुनिया,नव भारत टाइम्स, देश बन्धु,ज्ञान दूत, आदि पत्रिकाओं म प्रकाशित हई है. उनको चेतना (१९७३),कुल २१ कवितायेँ संग्रहित है.जब कि चुनौती(१९७९) आदि.ज्ञानदत धनुकचंद का काव्य काव्यकली, केश्री कुमारी रागपत का वीणावादिनी काव्य संग्रह आदि.

मूल्य बोध को द्रष्टि से मॉरीशस को कविता आस्था विश्वास और उम्मीद को रचनाएं है.डा. नगेन्द्र ने ठाकुर दत्त पाण्डेय के आलोक को भूमिका म काव्य के संदभ म अपने विचारों को व्यक्त किया है- "आज जिस गति से जीवन मूल्य बदल रहे ह,उनसे मेल बैठाना कई बार कवि के लिए कठिन हो जाता है.विशेषत: जब फैशन के नाम पर जीवन मूल्यों म परिवतन को मांग को जा रही है. अत: आज को युवा पीढ़ी के व्यवहार से आश्वस्त नहों हो पाते और इनको कविताओं म उनके प्रति सहसा आक्रोश व्यक्त हो जाता है.बनावट और दिखावट को बात उसके गले नहों उतरती. यह कवि को मूल ग्राही प्रवृति को मजबूरी है." (११)

:- संदभ सूची :-

(1)आयवीर-संपादक-पं.काशीनाथ किश्तो-शुक्रवार-30,जुलाई,1937

(2) आयवीर-संपादक-पं.काशीनाथ किश्तो--27,अगस्त ,1937

(3) आयवीर-संपादक-पं.काशीनाथ किश्तो--3,सितम्बर ,1937ई.

(4) मॉरीशस म हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास:श्यामधर तिवारी:पृ:61

(5) वही: पृ:61

(6) मॉरीशस म हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास:श्यामधर तिवारी:पृ:66

(७) वसंत चयनिका :पृ:५१६

(८) मॉरीशस म हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास:श्यामधर तिवारी:पृ:66

(९)एक डायरी बयान –पृ:७०-७१

(१०) मॉरीशस के नौ हिंदी कवि : सं.अभिमन्यु अनत, भूमिका

(११)आलोक: शुभाशंसा:डा.नगेन्द्र:(प्राम्भिक)ले.ठाकुर पाण्डेय